विविधता तो सिर्फ पहला कदम है

अंजुम नईम

भारतीय अमेरिकी समाजशास्त्री **ईबू पटेल** को भरोसा है कि युवा पीढ़ी धार्मिक भेदभाव की खाईयों को पाटकर नागरिक सेवा के लिए एकजुट होगी।

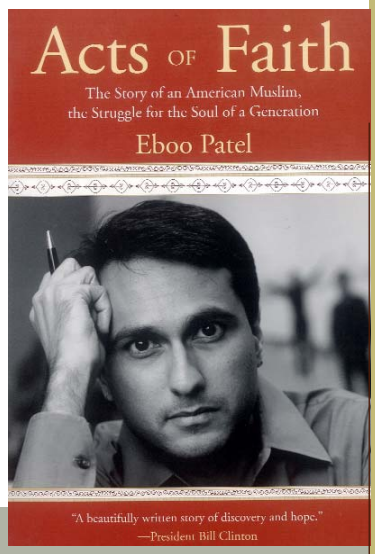

इंटरफेथ यूथ कोर के निदेशक ईबू पटेल के शिकागो, इलिनॉय स्थित कार्यालय की दीवार पर 20 वीं सदी के शुरुआती दौर के अमेरिकी चित्रकार नॉर्मन रॉकवेल का प्रसिद्ध चित्र ''फ्रीडम ऑफ़ वर्शिप '' टंगा है। चित्र में एक भीड़ प्रार्थनारत है, भीड़ में स्त्रियां भी हैं और पुरुष भी। रॉकवेल का उद्देश्य विभिन्न नस्लों और धर्मो के लोगों को कंधे से कंधा मिलाकर, एक दूसरे की उपस्थिति में सहज अनुभव करते, एक ही दिशा में खड़े प्रार्थना करते दिखाना था।

33 वर्षीय पटेल कहते है कि चित्र अपनी विविधता को सहजता से स्वीकार करते और शांति के साथ रहते लोगों का जीवंत चित्रण है। गुजराती मुस्लिम समुदाय के पटेल के पिता 1975 में अमेरिका में बस गए थे। पटेल विविधता को स्वीकारने और इसके प्रति सहिष्णुता के अमेरिकी आदर्श को चित्रित करने की रॉकवेल की इच्छा को स्वीकारते हैं। वह विविधता की स्वीकृति के अमेरिकी आदर्श से आगे जाकर ''धार्मिक अनेकतावाद'' को प्रचारित करना चाहते हैं। विभिन्न धर्मो के युवाओं के मन में परस्पर सम्मान, एकजुट होकर समस्याओं के समाधान और अपने समाजों को बेहतर बनाने का भाव जगाने के उद्देश्य से उन्होंने यूथ कोर की स्थापना की।

युवा सेवा

अमेरिकी विदेश मंत्रालय और इंटरफेथ यूथ कोर के एक साझा कार्यक्रम के अंतर्गत हाल ही में भारत आए पटेल ने स्पैन से बातचीत में कहा, ''वैश्विक धार्मिक टकराव के इस दौर में आदर्शवाद का नया चेहरा है: धार्मिक सीमारेखाओं के परे जाता युवाओं के बीच सहयोग। शाम की खबरों में एक दूसरे को मारते युवा दिखते हैं, पृष्ठभूमि में प्रार्थना के स्वर गूंजते हैं। लेकिन फिर भी, दुनिया भर में विभिन्न धर्मो के लोग सेवा की सांझी आकांक्षा के कारण एकजुट भी हो रहे है।''

उनका मत है कि यह युवा धर्म के बारे में उगले जाने वाले जहर को नज़रंदाज करते हुए उस अमेरिकी सपने को साकार करने का प्रयास कर रहे हैं जिसमें एक की स्वतंत्रता अविच्छिन्न रूप से दूसरे की स्वतंत्रता से जुड़ी है। उन्हें लगता है कि ऐसे आदर्शवाद के लिए सही समय यही है: राष्ट्रपति बराक ओबामा ने अमेरिकियों को आह्वान किया है कि वह समुदाय सेवा को और भी ऊंचे स्तर पर ले जाएं। और युवा वर्ग राष्ट्रपति का उत्साही समर्थक है। वाशिंगटन, डी. सी. स्थित कॉर्पोरेशन फॉर नेशनल एंड कम्युनिटी सर्विस के अनुसार वर्ष 2007 में 6 करोड़ से अधिक अमेरिकियों ने 8.1 अरब से अधिक घंटे का समय सामुदायिक सेवा में लगाया जिससे समुदायों को 158 अरब डॉलर से अधिक का लाभ प्राप्त हुआ।

हाल ही में व्हाइट हाउस कांउसिल ऑन फेथ बेस्ड एंड नेबरहुड पार्टनरशिप्स में शामिल किए गए पटेल को आशा है कि वह धार्मिक समुदायों के बीच सहयोग पर एक टास्क फोर्स को आकार दे पाएंगे। वह कहते हैं, ''हमारा काम बस शुरू ही हो रहा है। मैं इस देश में धार्मिक समूहों के सकरात्मक योगदान की संभावना को पहचाने जाने के रूप में देखता हूं।'' मैं आशा करता हूं कि इस काउंसिल में मेरा साल इस बात की स्वीकृति के साथ खत्म हो कि धर्म आधारित समूह यदि साथ मिलकर काम करें तो अच्छा काम कर सकते हैं।

वर्ष 2007 में प्रकाशित पटेल की पुस्तक 'एक्ट्स ऑफ़ फ़ेथ' दरअसल उनकी अपनी जीवन यात्रा और धार्मिक अनेकतावाद के निर्माण के लिए एक अन्तर्धार्मिक युवा आन्दोलन तैयार करने के अपने सपने के बारे में लिखी गई है,।

पटेल स्पष्ट करते है, ''धार्मिक अनेकतावाद में तीन चीजें शामिल हैं- सब से पहले तो धार्मिक पहचान का सम्मान जिसमें धर्मनिरपेक्षता और निरीश्वरवाद के लिए सम्मान शामिल है; दूसरे, विभिन्न धर्मो के अनुयायियों के बीच एक-दूसरे को प्रेरित करने का सम्बन्ध होना चाहिए; और अन्त में, धार्मिक अनेकतावाद में सबके हित के लिए सब का कर्म। सभी परम्पराओं में दी गई सेवा की भावना को पहचानना ही काफी नहीं है, हमें मिल कर उस पर अमल भी करना चाहिए।''

पटेल मानते हैं कि अधिकांश अमेरिकी धार्मिक अनेकतावाद को महत्वपूर्ण मानते हैं, बल्कि उनमें इसकी और झुकाव भी दिखता है। अगर ढांचा नेतृत्व कौशल प्रशिक्षण और संसाधन मिल जाएं तो वे एक अनेकतावादी संसार की रचना कर भी सकते हैं।

बहुसांस्कृतिक समाज के धर्मो के बीच संवाद

पटेल बताते हैं, ''हमारा संगठन कई तरीकों से विदेशों में काम करता है। कुछ हफ्ते पहले ही इंटरफेथ यूथ कोर की दो मुस्लिम सदस्याएं विदेश मंत्रालय के सहयोग से पश्चिमी यूरोप की यात्रा पर निकली हैं जहां वे यूरोप के युवा धर्म नेताओं को प्रशिक्षण देंगी.... उनका उद्देश्य यूरोप में अन्तर्धर्मी युवा आन्दोलन शुरू करना है।''

वह स्पष्ट करते हैं, ''वैश्वीकरण के इस युग में संसार की दूरियां सिमट रहीं हैं। अलग-अलग संस्कृतियों और धर्मो के लोग एक दूसरे से सहयोगी, पड़ोसी, मित्र, छात्र, शिक्षक, के रूप में मिलते रहते हैं। ऐसे ही विविधतापूर्ण, बहुसांस्कृतिक समाज में अंतर्धर्मी संवाद फल-फूल सकता है।''

पटेल मानते है कि धार्मिक अनेकतावाद के बिना शांति संभव नहीं है और युवा नेतृत्व के बिना धार्मिक अनेकतावाद। आज के युवा मानवता के इतिहास के सबसे वैश्वीकरण दौर में पल-बढ़ रहे हैं। वास्तव में वह पहली अन्तर्धर्मी पीढ़ी हैं। वह कहते हैं: इस पीढ़ी के लिए धर्म की पहचान से जुड़े प्रश्न ''मुस्लिम होने का अर्थ क्या है? तक सीमित नहीं रहेगा। उसमें एक और बात जुड़ेगी, हिन्दुओं, ईसाइयों, यहूदियों, बौद्धों, सिक्खों और धर्मनिरपेक्षतावादियों के समुदाय, देश, संसार में मुस्लिम होने का क्या अर्थ हैं?''

21 वीं सदी की धार्मिक (विभाजन) रेखा

पटेल बताते हैं, ''सौ बरस पहले महान अफ्रीकी-अमेरिकी विद्वान डब्लू.ई.बी. डुबॉय ने कहा था, ''20वीं सदी की समस्या रंग की विभाजक रेखा होगी; ज़्यादातर लोगों को लगा कि यह रेखा श्वेत और अश्वेत के बीच है। लेकिन कोई 60 बरस बाद डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर ने इस पैमाने को बदल डाला। उन्होंने कहा, ''वास्तविक विभाजक रेखा भाइयों की तरह एक साथ जीने की इच्छा वालों और मूर्खों के रूप में एक साथ मरना चाहने वालों के बीच हैं।''

पटेल मानते है कि 21 वीं सदी पर धार्मिक (विभाजन) रेखा का सवाल हावी रहेगा। ''हमारे सामने पहली, ओर सबसे बड़ी चुनौती यह पहचानना है कि धार्मिक (विभाजन) रेखा मुसलमानों और ईसाइयों, हिंदुओं और बौद्धों और धर्मनिरपेक्षतावादियों और निरीश्वरवादियों को नहीं बांटती। वह तो धार्मिक निरंकुशतावादियों और धार्मिक अनेकतावादियों को बांटती है। धार्मिक निरंकुशतावादी अपने समूह का बर्चस्व चाहते हैं जबकि धार्मिक अनेकतावादी एक ऐसा संसार चाहते हैं जहां सभी धर्मों, जातियों, वर्गों के लोग सहज सम्मान और प्रेम से रह पाएं।

पटेल कहते है कि हमें अनेकतावादी दृष्टि के पक्ष में खड़ा होकर अतिवादियों को उनकी सही जगह समाज के बाहरी हाशिए पर पहुंचाना होगा।